International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 85-88

'निराला' की कालजयी रचना 'राम की शक्तिपूजा'

डॉ0 दिलीप कुमार झा
फोर्टगलास्टर विद्यालय (उ. मा.), राधानगर, हावडा, पश्चिम बंगाल़, भारत।

सारांश
''सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' आधुनिक युग के सर्वाधिक मौलिक क्षमता से संपन्न कवि है। भाषा और संवेदना के जितने रंग और स्तर निराला मे है, उतने किसी अन्य कवि मे नही। 'जुही की कली' (1916) से लेकर मृत्यु विषयक उनकी अंतिम कविताओं (1961) तक निराला का कवि बराबर गतिशील और सर्जनशील रहा है। जयशंकर प्रसाद की तरह निराला ने भी पिभिन्न काव्य – रूपों का प्रयोग किया, परंतु जहाँ प्रसाद कविता के साथ नाटक, उपन्यास, कहानी तथा आलोचन में भी अपने को कुशलतापूर्वक व्यक्त कर सके है, वहाँ निराला का सफल माध्यम कविता ही है। ''प्रस्तुत शोध पत्र में कालजयी कविता के रूप में 'राम की शक्तिपुजा' पर विचार किया गया है।

मूल शब्द: राम की शक्तिपूजा, नराला, त्रिपाठी, उपन्यास, कहानी

प्रस्तावना
''निराला जी की 'राम की शक्तिपुजा' महाकाव्योचित औदित्य से संपन्न लंबी कविता है। यह आधुनिक काल में महाकाव्य का उत्तरोत्तर सूक्ष्म होता विधान है। पुराण – कथा, प्रतीकात्मकता और आधुनिक संवेदना के कई स्तरों पर कविता एक साथ प्रवाहित होती है। छायावाद को शक्तिकाव्य कहने में 'कामायनी' के साथ 'राम की शक्तिपुजा' मिलकर आधार बनाती है।
सर्गबद्ध प्रबंध 'कामायनी' में भाषा की कुछ भूलें मिल जाती है, शैलीगत शिथिलताएँ भी। पूरी रचना इन खामियों का अतिक्रमण कर जाती है, वह अलग बात है। 'राम की शक्तिपुजा' का विधान इस तूलना में एकदम निर्दाष है। एक– एक शब्द सुचिंतित जैसै जूडा हूआ है। फिर स्थान – स्थान पर नाटकीय मोड़ कविता के विन्यास में एकरसता नही आने देते। महाकाव्य की उदात्तता और नाटक की गति ये दोनों मिलकर 'राम की शक्तिपुजा'को एक अपूर्व रूप प्रदान करते है। परिकल्पना की विराटता और चित्रण की सूक्ष्मता का संयोजन 'कामायनी' की ही तरह 'राम की शक्तिपुजा' के विधान की भी विशेषता है। राम का अंकन यूगीन संवेदना के अनुकूल यहाँ पूरी तरह माननीय धरातल पर हुआ है। सामान्य मनुष्य की तरह वे भी विषम परिस्थिति में दुखी और निराश होते है और उनकी आँखों से आसू गिर पड़ते है।''[2]

अन्तर्वस्तु
'' 'राम की_शक्तिपुजा' कविता का प्रारंभ घने अंधकार से होता –
'रवि हुआ अस्तः ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम रावण का अपराजये समर' (राम की शक्तिपुजा)'' सूर्य डूब गया और प्रकाश के पत्रों पर राम– रावण के अपराजये समर का इतिहास सनातन सत्य बन कर अंकित हो गया। इस युद्ध का वर्णन – कौशल निराला है।
राम रावण के युद्ध में राक्षसों के पदचाप से धरती हिल उठी। लंकापति रावण वानरी सेना का मानर्मदन कर चुका है। रामजी की वानरी सेना 'हूह' शब्द करती हूई राक्षसो पर टूटती है। सुग्रीव, अंगद, नलनील सबके सब मूच्छित हो गए है। संध्या होने पर राम और रावण दल अपने – अपने शिविर में लौटते है। राक्षसों की विजय से रावण अट्टहास कर रहा है। राम के धनुष की प्रत्यँचा ढीली पड़ गई है। उनका जटा – मुकुट खुलकर पीठ, बाहु और बक्ष पर इस तरह फैल गया है जैसै दुर्गम पर्वत पर रात्रि का अंधकार फैलता है। निराशा के इस घोर अंधकार में सिर्फ राम के दो नेत्र दिप्र हो रहे है। अमावस्या की भयंकर काली स्याही रात और गरजता हुआ विशाल समुद्र। चारों ओर अंधकार ही अंधकार और प्रकाश का नामोनिशान नही। राम का जो मन आजतक पराजय स्वीकार नही किया था वही आज असर्मथ होकर अपनी पराजय स्वीकार कर रहा है। इसी क्षण निराश और हताश राम को अचानक स्वयंवर के दिनों की जानकी स्मरण हो आती है। जानकी की वह महमह वाटिका, राम और सीता का वह प्रथम मिलन नयनों से नयनों का संगोपन और संभाषण का स्मरण होते ही राम निराशा की उस भयावह पृष्ठभूमि से भाग निकलते है और उनका पराक्रमी हाथ एक बार फिर शिव – धनुष भंग करने के लिए अपने – आप उठ जाता है। इसी क्षण राम को वे सभी दिव्य अस्त्र – शस्त्र याद आते है, जो देवदूत के समान उड़ते हुए ताड़का, खरदुषण, मारीच आदि को भस्म कर चुके थे लेकिन इसी क्षण उन्हें महाशक्ति की विराट मूर्ति की भी याद आती है राम के नेत्रों में एक क्षण सीता के राममय नेत्र अंकित होते है तो दूसरे क्षण अंकित होते है महाशक्ति की गोद में बैठकर पापी रावण अट्टहास कर रहा है। इस दैन्यसिक्त परिस्थित में राम की आँखों सें मोती जैसै दो अश्रु – विन्दु ढुलक पड़ते है। हनुमान राम के चरणो को देख रहे है। वे राम की आँखों सें टपकने बाले अश्रु – मोती को देखकर व्याकुल हो उठे''।[3]
''फिर तो हनुमान अट्टहास कर पापी रावण के इष्टदेव शिव के निवासस्थान 'महाकाश'को निगलने के लिए एकादश रूद्र मे पहुँच गए। इस महानाश को देखकर शिव भी घबड़ा गए। शिव जी शक्ति का स्मरण करने लगे। तब महाकाश में अंजना के रूप मे शक्ति का उदय होता है। अंजना हनुमान की माता है। वह मीठी – मीठी बोली में हनुमान को फटकारती है। अंजना की मधूर फटकार सूनकर हनूमान धीरे – धीरे महाकाश से धरती उतर आते है।''[4]
''उधर विभिषण चिंतित है। उनकी मुख्य चिंता यह है कि राम यदि इसी निराश और हताश मनःस्थिति में रह गए तो वह लंका का राजा कैसे बनेगा ? विभिषण ने राम को उत्साहित करने के लिए लंबा भाषण दिया, परंतु उस भाषण का स्थित प्रज्ञ राम पर कोई प्रभाव नही पड़ा। तब जामवंत राम को सही मंत्र दे ने आए।

जामवंत ने राम को कहा कि पापी, अत्याचारी रावण यदि साधना द्वारा महाशक्ति को अपने पक्ष में कर सकता है तो क्या राम सच्चीपूजा और उपासना द्वारा 'महाशक्ति' को अपने पक्ष में नही ला सकते ? जामवंत ने राम को सलाह दिया कि 'शक्तिपूजा' द्वारा ही रावण को पराजित किया जाय। जामवंत के इस सलाह को सुनकर राम के निराश मन में आशा का संचार हुआ। राम के आदेशनुसार हनुमान एक सौ आठ कमल ले आए। सामने विराट पर्वत की फैली प्रकृति को ही 'महाशक्ति' का प्रतिरूप मानकर राम उनकी अराधना में लीन हो गए। राम शक्ति की अराधना में लीन है। सवेरा हुआ। सूर्य की प्रथम रश्मि फूटी। अन्य दिनो की तरह समर भूमि मे फिर दोनो दलो का कोलाहल एवं संग्राम शुरू हो गया लेकिन राम अपने मन को एकाग्र करके शक्ति की अराधना में लीन थे। शक्तिपुजा करते – करते पाँच दिन बीत गए और तब छठे दिन राम का मन योगियों के आज्ञाचक्र पर पहुँच गया। अब तो राम के जप के महाकर्षण से शिव का 'महाकाश'भी थर – थर काँपने लगा। देवी को प्रत्येक जप के बाद कमल अर्पित करते हुए राम एक ही आसन पर बैठे रहे। अब पूजा का आठवाँ और आखिरी दिन भी आ पहुँचा। इस दिन राम का मन सहस्रार पर पहुँच गया। देवी को अर्पित करने के लिए मात्र एक कमल बचा हुआ है। इसे अर्पित करते ही रात की साधना पुर्ण हो जाएगी। रावण भय से अब संसार मूक्त हो जाएगा और जानकी का उद्धार भी निश्चित, मगर हाय रे नियति का क्रूर और निर्मय व्यंग्य ! रात की दोपहरी बीतते ही स्वयं महाशक्ति दुर्गा महाकाश के नीचे उतर आयी और पूजा का अंतिम इन्दीवर (कमल) चुरा ले भागी। राम का तपःपुत हाथ जब इन्दीवर (कमल) लेने के लिए बढ़ता है तो वह शुन्य से टकराकर लौट आता है। कमल नही – अब क्या होगा ? राम यदि आसन से उठते है तो उनकी संपूर्ण साधना विफल हौ जाती है और अंतिम कमल नही चढ़ा पाते हैं तब भी साधना अधुरी रह जाती है। राम बिलख पड़ते है – हाय ! अब जानकी (सीता) का उद्धार कैसे हो सकेगा ? इसी क्षण गंभीर विपत्ति की बेला में रात को अपनी माँ कौशल्या याद आती है। उन्हें याद आता है कि माँ कौशल्या तो सबदिन मुझे 'राजीव नयन' कहकर ही पुकारती थी। अभी तो राम के पास दो और नीलकमल (दो आँखे) शेष है। एक कमलनयन (आँख) ही चढ़ाकर वे शक्ति की पूजा कर लेंगे। राम तुरंत ही निश्चय कर लेते है –

'पूरा करता हूँ दे कर माँतह यह राजीव नयन।''[5]

''राम लक – लक करता हूआ ब्रहासार निकालकर दाहिने आँख की ओर बढ़ा देते है। उन्होने अपना दाहिना नेत्र दुर्गादेवी को अर्पित कर लेने का निश्चय किया। जैसे ही राम का तपःपूत हाथ कातर आँख की ओर बढ़ा वैसे ही महाशक्ति दुर्गा ने साक्षात प्रकट होकर राम के हाथ को पकड़ लिया। राम आँखें खोलकर महाशक्ति का दर्शन करते है और राम का विनम्र प्रणाम स्वीकार कर दुर्गा (महाशक्ति) वरदान देती है –
'होगी जय। होगी जय। ओ पुरूषोत्तम नवीन।'
विजय का वरदान देकर महाशक्ति राम के वदन में लीन हो गई।"[6]

'राम की शक्तिपूजा' में रूद्रावतार हनुमान

'' 'राम की शक्तिपूजा' में हनुमान की अर्न्तकथा का प्रारंभ राम के गहन अन्तर्द्वन्द्व के चित्रण के बाद हुआ है। इस अन्तर्द्वन्द्व की दशा में राम के मन को बार – बार संशय हिला रहा है और रावण की जय का भय भी उन्हें रह – रह कर आंदोलित कर रहा है। राम की संकल्प शक्ति को दबाता हुआ यह संशय क्रमशः बढ़ता ही जाता है और अंत में ऐसी दशा आती है कि संशय – ग्रस्त राम को रावण का अट्टहास सुनाई पड़ता है। इसके बाद राम की आँखों से आँसू की दो बूँदें टपक कर उन्हीं के चरणों पर गिर जाती है। राम के इन अश्रु – बिन्दुओं को चरणसेवी हनुमान देख लेते है और विकल हो जाते है। सर्वशक्तिमान भगवान राम की आँखों के आँसू ! इसी उन्मधित विकलता की दशा को अंकित करते हुए निराला ने हनुमान की अन्तर्कथा प्रारंभ की है।''[7]
इस अन्तर्कथा के प्रारंभ होने के पहले भी राम की शक्तिपूजा, में हनुमान का उल्लेख दो बार मिलता है। हनुमान का पहला उल्लेख वानर सेनापतियों के साथ किया गया है, जो सुबेल पर्वत पर 'प्रात के रण का समाधान करने के लिए' इकट्ठे हुए थे –

आये सब शिविर, सानु पर पर्वत के, मंथर
सेनापति दल – विशेष के अंगद, हनुमान ![8]

दूसरी बार हनुमान का उल्लेख सेवक की भूमिका में किया गया है, जहाँ वे श्वेत शिला पर बैठे हुए रघुकुल – मणि के कर–पद–प्रक्षालनार्थ, निर्मल जल ले आते है –
बैठे रघुकुलमणि श्वेत शिला परए निर्मल जल
ले आये कर – पद – क्षालनार्थ पटु हनुमान।[9]

भाषा

''कविता के आस्वादन का मतलब है – उसकी भाषा के प्रति संवेदनशील होना। यह बात कितनी उल्टी क्यों न लगे, लेकिन यह सत्य है कि कविता अंततः भाषा है। जो भाषा के प्रति संवेदनशील नही, वह उसका आनंद नही ले सकता। यह इससे भी प्रमाणित है कि कविता को उसकी भाषा से अलग नही किया जा सकता। वस्तुतः कविता और गद्य का असली अंतर यही है कि गद्य की कोई रचना अपनी भाषा से अलग होकर भी किसी हद तक जीवित रह सकती है, लेकिन कविता नही। कविता को उसकी भाषा से अलग करने का मतलब है उसकी मृत्य, जो टीकाओ और भाव्यों में आसानी से देखने को मिल सकती है। इसका कारण यह है कि गद्य में जहाँ भाषा बहुत कुछ साधन होती है, वहाँ कविता में साधन भी और साध्य भी। आकस्मिक नही कि फ्रांसीसी कवि मलोर्म ने कविता को यह कह कर परिभाषित किया था कि कविता उसे कहेगे जिसका अनुवाद न किया जा सके। दिनकर जी ने एक जगह लिखा है कि कविता की सारी आलोचना वस्तुतः उसकी भाषा की आलोचना है। भारतीय काव्यशास्त्र का साक्ष्य ले, तो उसमें बहुलांश में काव्यभाषा में विश्लेषण है। अलंकार, रीति, वक्रोक्ति और ध्वनि भाषा की ही तो विशेषताएँ है। स्वभावतः निराला की 'शक्ति – पूजा सबसे पहले मुझे अपनी भाषा के लिए प्रिय है। इस भाषा के अनेक स्तर इस कविता में देखने को मिलते है। युद्धवर्णन की शब्दावली आगपूर्ण है, तो पुष्पवाटिका के प्रसंगें वर्णन की माधर्यपूर्ण। सरल भाषा के नमुने 'लौट युग दल। राक्षस – पड़ताल पृथ्वी टलमल, विंध महोल्लास से बार–बार आकाश 'विकल से लेकर 'द्विपहर रात्रि, साकार हुई दुर्गा छिपकर,। हँस उठा ले गई पूजा का प्रिय इंदीवर' तक बिखरे हुए है। बीच – बीच में 'है अमानिशा, उगलता गगन घना अंधकार' , 'लांछन कां लें जैसे शंशाक नभ में अशंक' , 'फिर खोले पलक कमल – ज्योतिर्दल ध्यान – 'लगन बोले भावस्थ चंद्रमुख – निंदित 'रामचंद्र अथवा 'दक्षिण गणेश, कार्तिक बाएँ रण – रंग – राग, – जैसी पंक्तियाँ मिलती है, जो कविता को तरह – तरह के स्वर से निनादित करती चलती है। भिन्न संदर्भ में प्रयुक्त मुक्तिबोंध का एक शब्द लेकर कहें तो यह कविता 'शत – ध्वनि – संयम – संगीत' है। इस द्रष्टि से खड़ीबोली की कोई कविता

इसके समकक्ष नही रखी जा सकती।''[10]

''शक्तिपूजा की भाषा की एक बड़ी विशेषता इसका अनगढ़पन है, एक लापरवाहीए जो निराला ने उसे रचने में बरती है। निराला मे पांडित्य भी था और वे 'सजग कलाकार' भी थे। उनकी अनेक रचनाएँ इसका सशक्त प्रमाण उपस्थित करती है। लेकिन 'शक्तिपूजा' से जैसे वे अपने काव्य में एक नई शुरूआत करते है, जिसकी परिणति आगे चलकर 'देवी सरस्वती' – जैसी लंबी कविता और अंतिम दौर के उनके गीतो में होती है। यहाँ कवि का ध्यान भाषा के माध्यम से अधिकतम मात्रा में अपने को अभिव्यक्त करने पर है, उसके परिष्कार या ढलाव पर नही। अनगढ़पन और लापरवाही 'शक्तिपूजा' की भाषा की जान है। एक – दो उदाहरणों से ही यह बात स्पष्ट हो जाएगी। इस कविता के आरम्भ में ही निराला संस्कृत के 'व्युह', 'समुह' और प्रत्युह' के साथ हिन्दी के ठेठ ध्वनिसूचक

'हूह'शब्द का प्रयोग करते है वह भी समस्त पद में 'क्रुद्ध – कपि – विषय – हूह'। कहने की आवश्यकता नही कि यहाँ 'हूह' शब्द ने जो काम किया है। वह संस्कृत का कोई तत्सम शब्द नही कर सकता था। इसी तरह 'है अमानिशा' वाले वर्णन में उन्होंने संस्कृत शब्दो के बीच अरबी के 'मशाल' शब्द का प्रयोग किया है – 'भूधर ज्यों ध्यान मग्न, केवल जलती मशाल।' इस शब्द के साथ 'उगलता गगन घन अंधकार में जो 'उगलता' है, हिन्दी का ठेठ ही नही, भदेस प्रयोग, उस पर भी हमारा ध्यान जाना चाहिए। ये दोनो ही शब्द यहाँ बहुत ही समर्थ है। निराला अच्छे संस्कृतज थें, लेकिन भाषा के मामले मे शुद्धतावादी नही। उनकी मम्यता थी कि कोई भी जुबान नायाक नही होती। इसी कारण यह संभव हुआ कि 'शक्तिपूजा' में अरबी ंफारसी के शब्दों से लेकर हिन्दी के भदेस शब्दो तक का प्रयोग कर सके।''[11]

निष्कर्ष

''हिन्दी में इसको लेकर लगभग आम सहमति है कि निराला की कविता 'राम की शक्तिपूजा' खड़ीबोली की सर्वश्रेष्ठ कविता है। आलोचक तो इस बात को मानते ही है, भिन्न – भिन्न संवेदना के रचनाकार भी मानते है। निराला दिनकर और अज्ञेय की काव्य –रूचि के कभी अनुकुल नही रहे, पर इन रचनाकारो की द्रष्टि में भी यह कविता हिन्दी की एक अद्वितीय रचना है।''[12]

'' ,राम की शक्तिपूजा' महाकवि निराला की श्रेष्ठ कविता है। सन 1936 ई॰ (23 अक्टूबर) मे रचित यह कविता निराला के पौरूष, प्रज्ञा, प्रपति और भक्ति की काव्यकला – कुशल अभिव्यक्ति है।'' 13

निराला की राम की 'शक्तिपूजा' पाँच खंड़ो में बँटी हुई है। पहले खंड़ में युद्ध से लौटती हुई राम की सेना का वर्णन है। दुसरा खंड़ रात्रि – वर्णन से प्रारंभ हुआ है, जिसके अर्न्तगत स्मृत्यभास शैली में युद्ध – पूर्व रामकथा का संकेत प्रस्तुत किया गया है –

है अमानिशा उगलता गगन घन अंधकार

भक्ति नयनो से संजल गिरे दो मुक्तादल। ('राम की शक्तिपूजा') तीसरे खंड में हनुमान की अर्न्तकथा है। चौथे खंड में विभीषण के द्वारा चिंता से आतुर राम का उत्साहर्वद्धक किया गया है और इसी खंड में जाम्बवान ने राम के समक्ष शक्तिपूजन का प्रस्ताव रखा है। अंत में पाँचवाँ खंड है, जिसके अंतर्गत राम के द्वारा शक्ति की मौलिक कल्पना, शक्ति को अराधना और कृपामयी शक्ति का विजय – वरदान वर्णित है। 'राम की शक्तिपूजा' की संपुर्ण कथा – यब्टि पर विचार करने से ऐसा प्रतीत होता है कि तीसरे खंड में हनुमान की अंर्तकथा के जुड़ जाने से ष्राम की शक्तिपूजाष का काव्य – वैभव बढ़ गया है।

''ध्वनि प्रवाह की गति के आधार पर 'राम की शक्तिपूजा' की विशिष्टता स्पष्ट करते हुए डॉ0 रामविलास शर्मा ने उसकी तुलना 'तुलसीदास' से इस रूप में की है – 'तुलसीदास के विभिन्न अंशों में इस प्रवाह की गति में प्रायः एक सी रहती है, 'राम की शक्तिपूजा, के विभिन्न अंशों में इस गति में बड़ा भेद है। कही उद्धत उददाम प्रवाह है, कही स्थिर – सा निर्मल जल। अर्थ की वक्रता, मूर्तिविधान का घनत्व 'राम की शक्तिपूजा' में 'तुलसीदास' से अधिक है।''[14]

''राम की शक्तिपूजा' अपनी कल्पना में अदभुत ऊँचाई तक जाती है। राम के व्यक्तित्व और मन में जो नयी शंका भरी गयी है, उद्वेग और तनाव भरे गये है वे ही 'राम की शक्तिपूजा' को महान कृति बनाते है।''[15]

बंगाल में (शक्तिपूजा के प्रदेश या क्षेत्र में) शक्ति आराधना पर वैसी उर्जास्थित रचना नही लिखी गयी, जैसी 'राम की शक्तिपूजा' है। इस तथ्य की और ध्यान आकृष्ट करने के साथ डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी ने टिप्पणी की है – ''रवीन्द्रनाथ में प्रकृति और राष्ट्रीयता के विविध रूप है, श्रृगार और अध्यात्य का सूक्ष्म चित्रण है, प्रार्थना की गहराई है, पर शक्तिकाव्य का वह रूप नही जो प्रसाद या निराला में मिलता है। इसी क्रम में डॉ0 चतुर्वेदी ने 'राम की शक्तिपूजा' और 'कामायनी' के बीच यह समानता भी निर्दिष्ट की है – ''परिकल्पना की विराटता और चित्रण की सुक्ष्मता का संयोजन 'कामायनी' की तरह 'राम की शक्तिपूजा' के विधान की विशषेता है।'' उन्होनें 'राम की शक्तिपूजा' के महत्व का एक कारण यह माना है कि युगीन संवेदना के अनुकुल राम का चरित्र यहाँ मानवीय धरातल पर अंकित हुआ है। इसी दृष्टि से विचार करते हुए अनेक चिंतक इस निर्ष्कष पर पहुँचे है कि राम का संशय, भय, पराजय बोध वस्तुतः निराला का ही संशय, भय, या पराजय बोध है। तात्पर्य यह है कि निराला ने राम के कठिन संघर्ष के साथ तादात्म्य स्थापित कर लिया है।

जीवन का रथ सुख की चाँदनी और दुःख की अमावस्या दोनो को अपना चक्र बनाकर आगे बढ़ता है। साहित्य यदि जीवन का प्रतिबिंब है, तो इस कसौटी पर निराला की साहित्य साधना उपलब्धि के शिखर पर प्रतिष्ठित मानी जाएगी। श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी हिन्दी के निराले कवि है। 'राम की शक्तिपूजा' निराला जी का गौरव – कलश तो है ही, इसे आधुनिक हिन्दी – कविता की सर्वश्रेष्ठ माननी चाहिए।

'राम की शक्तिपूजा' 'निराला' जी के कवि – जीवन की सुरभि है, जिसकी आरती करने के लिए युग – युग का पाठक आतुर रहेगा। यह कविता महाकाव्यात्मक गरिमा धारण करती है। भारतीय भाषा के अनेक कवियो ने राम को ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित किया है परंतु सुख – दुःख और राग – विराग से प्रभावित होने वाले मनुष्य के रूप में राम का चरित्रांकन पहली बार 'निराला' जी ने किया है। 'निराला' जी आशा के चंदन चर्चित प्रकाश में प्रस्तुत कविता को समाप्त करते है। विवेच्य कविता अपने उत्कृष्ट शिल्पविधान के कारण पाठको को अंधकार से निकाल कर प्रकाश के क्षितिज पर खड़ा देती है। इसलिए निराला की 'राम की शक्तिपूजा' कविता हिन्दी कविता के काव्यकलश पर युग – युग तक चंदन चर्चित चाँदनी बरसाती रहेगी। अंधकार और निराशा का वृत फैला कर उसमें उजाला और आशा का रंगीन फूल खिला देने वाले श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' इसलिए तो हिन्दी के निराले कवि माने जाते है।

डॉ0 नंदकिशोर नवल ने लिखा है '' 'राम की शक्तिपूजा' के रचनाकाल से लेकर आज तक हिन्दी में कई काव्योदोलन आए है और कविता का फैशन लगभग पूरा बदल चुका है। फिर भी यह

कविता अपनी जगह पर कायम है, बल्कि जैसे – जैसे समय बीतता जाता है, असकी रंग और सुगंध से पंखुड़ियाँ खुलती जाती है। यदि इसे एक वृक्ष माने, तो हर पाठ में इसमे नए नए कोपल फूटते है, नए नए पत्ते निकलते है। 'शक्तिपूजा' का कोई पाठ पूरा अथवा अंतिम नही हो सकता, क्योंकि हर अगले पाठ में महसूस होता है कि पिछली बार कुछ छूट गया था।

हर बार अनेक शब्दों से अर्थ की नई – पई झंकृतियाँ फूटती है और संदर्भो से नए – नए संकेत प्रकट होते है। गेटे कि यह उक्ति प्रसिद्ध है कि सिद्धातं पीला पड़ता है, लेकिन जीवन का वृक्ष हमेशा हरा रहता है। 'राम की शक्तिपूजा' नायक निराला की यह कविता जीवन नही है, उसकी अनुकृति या प्रतिकृति है, लेकिन इतनी सटीक है कि यह जीवन की तरह ही सदाबहार है।''[16]

उपर्युक्त विलक्षण विशेषताओं के कारण निराला की 'राम की शक्तिपूजा' शीर्षक कविता एक कालजयी कविता बन गई है।

संन्दर्भ ग्रंथ

1. 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकाश', लेंखक रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गाँधी, मार्ग इलाहाबाद, प्रयुक्त संस्करण 2004, पृ – 122.
2. वही, पृ॰ 122 – 123.
3. 'राम की शक्तिपूजा का काव्यसौन्दर्य', लेंखक – डॉ0 दिलीप कुमार झा, उदय पत्रिकाए जुलाई 2002, पृ – 45.
4. वही, पृ॰ 46.
5. वही, पृ॰ 46.
6. वही, पृ॰ 46.
7. 'परिषद पत्रिका', डॉ0 कुमार विमलए बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, आचार्य शिवपूजन सहाय मार्ग, पटना, जुलाई 1998, पृ॰ 39, (34 अंक 1–4).
8. 'अनामिका' द्वितीय संस्करणए सूर्यकान्त त्रिपाठी षनिरालाष्ए पृष्ठ 149.
9. वही, पृ॰ 150.
10. 'परिषद पत्रिका', डॉ0 नंदकिशोर नवल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, आचार्य शिवपूजन सहाय मार्ग, पटना, जुलाई 1998, पृ॰ 54.
11. 'परिषद पत्रिका', 'राम की शक्तिपूजा' एक व्यक्तिगत प्रतिक्रिया लेखक डॉ0 नंदकिशोर नवल, जुलाई 1998, पृ 55.
12. वही, पृ 53.
13. 'परिषद पत्रिका' लेखक डॉ0 कुमार विमल, पृ 38.
14. 'कविता का पाठ और काव्य – मर्म', लेखक परमानंद श्रीवास्तव, अभिव्यक्ति प्रकाशन, विश्वविद्यालय मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण : सितम्बर 1992, पृ 34.
15. वही, पृ 36.
16. 'परिषद पत्रिका' लेखक डॉ0 नंदकिशोर नवल, जुलाई 1998, पृ॰ 52.